पारिस्थितिक संतुलन एवं संरक्षण

पारिस्थितिक संतुलन एवं संरक्षण - प्रकृति के सभी जीव एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं तथा एक-दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। अच्छे मिट्टी में पेड़-पौधों का विकास अच्छा होता है। पेड़-पौधे बड़े होकर मृदा कटाव को रोकते हैं तथा उर्वरता बनाए रखने में सहायता करते हैं। हरे-पौधे क्लोरोफिल की सहायता से प्रकाश संश्लेषण की क्रिया द्वारा अपना भोजन बनाते हैं ~~जिससे~~। शाकाहारी ~~जी~~ जीव पेड़-पौधों को अपना भोजन बनाते हैं जिससे उनमें ऊर्जा आती है। मांसाहारी जीव शाकाहारी जीवों को खाकर भोजन प्राप्त ~~क~~ करते हैं। ~~इस प्रकार~~ सर्वभक्षी सभी शाकाहारी एवं मांसाहारी जीवों को खाते हैं। इस प्रकार भोजन श्रृंखला से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। अतः प्राकृतिक एवं पारिस्थितिक संतुलन बना रहता है। ~~इससे प्राकृतिक~~ ~~एवं~~ पारिस्थितिकी सन्तुलन वह है जिसमें पारिस्थितिक तंत्र की प्राकृतिक अवस्थाओं में विविध चक्रों एवं ऊर्जा प्रवाह में एक सामंजस्य होता है जिससे एक गतिशील सन्तुलन बना रहता है जिसे पारिस्थितिकी सन्तुलन कहा जाता है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक प्राकृतिक व्यवस्था से संचालित है। हमारी पृथ्वी की उत्पत्ति में सहायक तत्वों के समान रूप से कार्य करने से हमारा अस्तित्व बना रहता है। वातावरण में व्यवस्था उत्पन्न होने से पर्यावरण असन्तुलित हो जाता है जिसके कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानव ही है।

पारिस्थितिक असन्तुलन का प्रमुख कारण वनों की अप्रत्याशित कटाई है। पर्यावरण विशेषज्ञों का मत है कि किसी भू-भाग का पारिस्थितिक सन्तुलन बनाए रखने के लिए

कम-से कम एक तिहाई भाग पर वन होने चाहिए। उनका यह भी विचार है कि पर्वतीय क्षेत्र के 60% भाग पर वनों का विस्तार होना चाहिए। मानव जब जंगली अवस्था में था तब पूर्णतः वनों पर ही आधारित था। धीरे-धीरे सभ्यता के विकास तथा बढ़ती जनसंख्या के साथ-साथ मानव ने जमीन पर कृषि की, खनिज निकाले तथा वनों को काटा जिससे पर्यावरण असन्तुलित हो रहा है। मानव द्वारा विभिन्न प्रकार के हाइड्रोकार्बन ईंधन जलाने से कार्बन डाइऑक्साइड तथा अन्य गैसें वायुमण्डल में मिलकर अदृश्य रूप से पृथ्वी को ढक लेते हैं जिससे ताप अवरक्त विकिरण के रूप में ऊपर नहीं जाता। परिणामत: तापमान में वृद्धि होती है।

वन्य जीव-जन्तु समूह के साथ रहकर नियमों के अधीन पारिस्थितिकी को सन्तुलित बनाए रखने में अपना दायित्व निभाते हैं। प्रकृति ने जिन संसाधनों को पर्यावरण सन्तुलित बनाए रखने के लिए प्रदान किया है, उन्हें नष्ट करके हम सन्तुलित तथा स्वचालित व्यवस्था में गड़बड़ी उत्पन्न कर रहे हैं जिससे हमारी व्यवस्था असन्तुलित हो रही है।

असन्तुलन की समस्या का निवारण - पर्यावरण असन्तुलन मानव द्वारा प्रकृति के साथ की गयी मनमानी का ही परिणाम है। पारिस्थितिकी असन्तुलन से हमारी सामाजिक तथा सांस्कृतिक समृद्धि के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। पारिस्थितिकी सन्तुलन को बनाए रखने के लिए मानव निम्न उपाय कर सकता है -

(1) जनसंख्या पर रोक - आज विश्व की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। जनसंख्या का भार बढ़ने से चारागाहों की कमी होती जा रही है क्योंकि मानव उनका उपयोग आवास के लिए कर रहा है। वनों में कमी आ रही है। अत: जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाना अति आवश्यक है।

(2) वनों का विस्तार - पारिस्थितिकी सन्तुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि वनों की अन्धाधुंध कटाई पर रोक लगायी जाए तथा वनों का विस्तार किया जाए। यदि कटाई होती भी है तो उसके कई गुणा पेड़ लगवाए जाएं क्योंकि पारिस्थितिक सन्तुलन बनाए रखने में वनों का योगदान सबसे अधिक होता है।

(3) औद्योगीकरण से बचाव - औद्योगिक क्रांति से होने वाले प्रदूषण से बचने के लिए कारखानों से निकलने वाले कचरे आदि की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। यथासम्भव इस अवशिष्ट पदार्थ को जलस्रोतों में नहीं मिलने देना चाहिए। घरों में धुंआ रहित ईंधन के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। लकड़ी तथा कोयले के स्थान पर विद्युत हीटर, कुकिंग गैस आदि का प्रयोग करना चाहिए। वाहनों से उत्पन्न धुंए को निकासी नली पर छलनी लगाकर कम किया जा सकता है।

(4) वन्य-जीव प्रबन्ध - वन्य जीव भी पारिस्थितिक तंत्र के अंग हैं। अतः इनका संरक्षण एवं प्रबन्धन अत्यधिक आवश्यक है। वनों के विनाश से इनकी अनेकानेक जातियां समाप्त हो गयी हैं तथा बहुत सी समाप्त होने के कगार पर हैं। भारत में मगर, घड़ियाल, अजगर, काला हिरन, हाथी, सिमचीता आदि अनेक स्पीशीज के संरक्षण के लिए कानून बनाए गए हैं।